लोकमत समाचार

अपना नागपुर

नागपुर, शनिवार, 7 फरवरी 2009

लोकमत समाचार शनिवार, 7 फरवरी 2009, नागपुर

बेहतर हो सकता है मेडिकल का सर्जरी विभाग : डॉ. गुप्ता

■ एयर एम्बुलेंस की सख्त आवश्यकता

नागपुर, ६ फरवरी (लोस सेवा).

हाल ही में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित हो चुके प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉ. अशोक गुप्ता का कहना है कि मध्य भारत का सबसे पहला प्लास्टिक सर्जरी विभाग मेडिकल कॉलेज में है. इस कॉलेज से बड़ी संख्या में प्लास्टिक सर्जन पढ़ाई कर निकले. वर्ष १९५७ में मेडिकल में प्लास्टिक सर्जरी विभाग के पीजी को मान्यता मिली. लेकिन पिछले २० से २५ साल के दौरान प्लास्टिक सर्जरी में काफी नई तकनीकें आईं, जिसे नहीं अपना पाने की वजह से मेडिकल पिछड़ गया. कुछ बदलाव कर मेडिकल के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को नई दिशा दी जा सकती है. पत्रकारों से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि मेडिकल के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को बेहतर बनाने के उपायों के संदर्भ में वैद्यकीय संचालक डॉ. वासुदेव तायडे से चर्चा हुई. उन्हें मेडिकल में एयर एम्बुलेंस की सुविधा लाने [illegible] सलाह दी. इसके माध्यम से दुर्घटना में घायल व्यक्ति को यदि १ घंटे के अंदर अस्पताल पहुंचाया जा सके, तो उसकी जान बचाई जा सकती है. ट्रॉमा सुविधा की आवश्यकता पर बल दिया. १५० करोड़ रुपए के पैकेज से निश्चित ही मेडिकल को नया जीवन मिलेगा. वर्ष १९७८ में मेडिकल से प्लास्टिक सर्जरी से स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर चुके डॉ. गुप्ता ने कहा कि उस जमाने में मेडिकल का एक विशिष्ट स्थान हुआ करता था. नागपुर से पुराना नाता होने की वजह से वे अक्सर मेलघाट, बडनेरा आदि स्थानों पर आकर प्लास्टिक सर्जरी कैम्प आयोजित करते हैं. २५ वर्षों में ७५ से ८० हजार प्लास्टिक सर्जरी ऑपरेशन करने वाले डॉ. गुप्ता ने बताया कि प्लास्टिक सर्जरी अमीरों तक सीमित नहीं रह गई. बांबे हॉस्पिटल में उन्होंने कई गरीबों का ऑपरेशन किया है. उनके पास दुर्घटना और आग लगने के मामले अधिक आते हैं. प्लास्टिक सर्जरी का स्तर देश में बेहतर होने लगा है. यादगार सर्जरी के बारे में उन्होंने बताया कि सौराष्ट्र के पास एक व्यक्ति ट्रक दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया. उस पर ७ मेजर ऑपरेशन किया गया. हर ऑपरेशन २२ घंटे का था. ३ वर्ष तक वह बांबे अस्पताल में भर्ती रहा. दूसरा मामला ४ दिन के एक बच्चे का था. उसके कमर के नीचे के भाग को एक जंगली जानवर ने नोच लिया था. उसका इलाज भी २ से ढाई वर्ष तक बांबे अस्पताल में चला.

- डॉ. अशोक गुप्ता